Kailasanatha Temple of Ellora

एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर

Navin Kumar
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. IInd Semester,
Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University
Paper- C.C.-9, ANCIENT INDIAN ART, ARCHITECTURE AND ICONOGRAPHY

भारत जैसे धर्म प्रधान देश में मंदिर निर्माण की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। परन्तु इस परम्परागत मंदिर निर्माण विधि से बिल्कुल अलग गुफा मंदिर की निर्माण विधि है। प्रारंभ में बौद्व भिक्षुओं ने अपनी उपासना के लिये पर्वत की विशाल चट्टानों को तराशकर गुफा का रूप दिया। निर्जन स्थानों में अवस्थित ये गुफायें इनके पूजागृह तथा निवास स्थल बने अर्थात चैत्य एवं विहार इस गुफा शैली द्वारा निर्मित हुए। बौद्वों के बाद ब्राहमणों ने भी इस शैली को अपनाया। गुफा शैली की चरम परिणति सातवीं से दशवीं शती के बीच हुई, जो एलोरा के गुफा मंदिरों से प्रभावित होती है।

महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट एलोरा में स्थित पर्वत की विशाल चट्टानों को काटकर अथवा खोदकर अनेक गुफाएँ निर्मित की गई। ये गुफाएँ ब्राहमण, बौद्व तथा जैन धर्म से संबंधित है जिसमें गुफा संख्या 13 से 29 तक अर्थात 16 ब्राह्मण गुफा मंदिर है।

एलोरा के ब्राह्मण मंदिरों में कैलाशनाथ मंदिर, दशावतार मंदिर, रामेश्वर मंदिर, रावण की खाई तथा सीता नहानी विशेष महत्वपूर्ण है। ये गुफा मंदिर भारतीय कला की अनुपम अभिव्यक्ति है। अगर अजन्ता की गुफायें अपनी भित्तिचित्रों के कारण विख्यात है तो एलोरा की गुफायें अपनी अलौकिक मूर्तियों

के कारण विख्यात है। यह उल्लेखनीय है कि ये मूर्तियॉ बौद्व, जैन तथा ब्राह्मण तीनों ही धर्म से संबंधित है।

एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर गुफा स्थापत्य की अनुपम रचना है जिसे देखकर लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं। इसकी निर्माण शैली परिपक्व एवं परिष्कृत है। सामान्यतया गुफा निर्मित करने के लिए पर्वत के निचले भाग से प्रस्तर को काटना प्रारंभ किया जाता है। नीचे का कार्य पूरा करने के बाद शिल्पकार उपर की ओर काटना एवं तराशना प्रारंभ करता है। परन्तु इसके विपरीत कैलाशनाथ मंदिर की निर्माण पद्वति भिन्न दिखाई पड़ती है। इसमें पर्वत की चोटी से कटाई प्रारंभ की गई है। फलस्वरूप शिल्पियों को मंदिर के उपरी हिस्से के निर्माण के लिए सीढ़ियों का प्रयोग नहीं करना पड़ा।

सर्वप्रथम पर्वत की चोटी पर एक किनारे तीन बड़े–बड़े आयताकार खाते एक दूसरे से समकोण पर सीधी खड़ी गहराई में काटा गया। इस प्रकार 300 फुट लम्बा और 175 फुट चौड़ा आयताकार क्षेत्र बन गया। तीनों खाते कट जाने के कारण बीच में 200 फुट लम्बा और 100 फुट चौड़ा तथा 100 फुट उॅचा प्रस्तर खंड बच गया जिसे बाद में तराशकर मंदिर का रूप दिया गया। इस प्रकार कैलाशनाथ मंदिर वास्तुकला नहीं बल्कि मूर्तिकला का एक अनुपम उदाहरण हैं अन्य संरचनात्मक मंदिरों की तरह इसमें अस्थायी चबूतरा या स्तंभ बनाने की आवश्यकता नहीं हुई चूकिं ठोस पर्वत ही इसका आधार है।

इस मंदिर की योजना में चार अंगो का समावेश है। इस मंदिर के मुख्य भाग में प्रवेश द्वार, नंदी मंडप और ऑगन हैं। प्रांगण की उत्तरी दीवार को खोदकर उसमें एक विशाल स्तंभयुक्त कक्ष बनाया गया है, जो संभवतः बाद का है। इसे लंकेश्वर कहा जाता है।

कैलाशनाथ मंदिर पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तृत है। इसका मुख्य भाग समानान्तर चतुर्भुजाकार है, जिसकी एक भुजा 150 फुट और दूसरी 100 फुट

की है। इन भुजाओं में जगह जगह विक्षेपण बने हैं, जो मंदिर के उपरी भाग में बने विक्षेपणों का भार ग्रहण कर रहे हैं। यह उल्लेखनीय है कि इस मंदिर का प्रवेश द्वारा पश्चिम की ओर है न कि पूरब की ओर जैसा कि सामान्यतया हिन्दू मंदिरों में होता है। इसका मुख्य कारण पर्वत की स्थिति है।

मुख्य मंदिर 25 फुट उॅचे एक ठोस चबूतरे पर खड़ा है। इसमें उपर से नीचे तक ढलाइयॉ बनी है। चबूतरे की दीवार की सतह में हाथी तथा सिंह की मूर्तियॉ उत्कीर्ण की गई है जिससे इसकी संदुरता बढ़ गई है। मुख्य मंदिर तक जाने के लिए सोपान मार्ग की व्यवस्था भी है जिसके द्वारा पश्चिम में बने स्तंभयुक्त छज्जे पर भी जाया जा सकता है।

मुख्य मंदिर का विमान और मंडप परम्परायुक्त शैली में निर्मित है किन्तु इसमें कार्निस, अर्द्धस्तंभ तथा बरसाती की योजना इतनी सुव्यवस्थित है कि सम्पूर्ण संरचना एक अनुपम कृति बन गई है। इस संरचना का उपरी भाग शिखर से मंडित है। यह शिखर तीन मंजिलों में नियोजित है। शिखर के अग्रभाग में नोकदार विक्षेपण बने हैं तथा शीर्ष भाग पर श्रृंग है। श्रृंगसहित सम्पूर्ण शिखर की उॅचाई 95 फुट है।

विमान के आधार भाग के चौड़े चबूतरे के चारों ओर प्रस्तर निर्मित चार परिशिष्ट देवालय है जो मुख्य मंदिर के ही प्रतिरूप हैं।

मुख्य मंदिर के भीतर 72 फुट लम्बा तथा 62 फुट चौड़ा एक स्तम्भयुक्त कक्ष है। इस कक्ष के आगे एक अन्तराल की योजना है जो गर्भगृह की ओर जाता है। संयुक्त कक्ष के भीतर 16 वर्गाकार सहायक स्तम्भों की व्यवस्था है, ये चार चार के समूह में प्रत्येक दिशा में निर्मित है। इस प्रकार स्तंभयुक्त कक्ष के केन्द्र में एक पार्श्वमार्ग बन गया है।

मुख्य मंदिर के समक्ष खड़ा नंदी मंडप वर्गाकार है जिसकी एक भुजा 20 फुट है और जो 25 फुट उॅचे चबूतरे पर खड़ा है। यह चबूतरा ठोस एवं

अलंकृत है। नंदी मंडप की सम्पूर्ण उॅचाई 50 फुट है। शेष मंदिर के साथ समता स्थापित करने के लिए इसे एक सेतु द्वारा जोड़ा गया है। इसी प्रकार प्रवेश गृह के साथ भी इसे जोड़ा गया है। प्रवेश गृह भी दो मंजिला है जिसमें मंदिर रक्षकों के लिए यथेष्ट स्थान है। नंदी मंडप के दोनों ओर 51 फुट उॅचा दो ठोस ध्वजस्तंभ है जिनके उपर शिव का प्रतीक त्रिशुल बने हैं।

कैलाशनाथ मंदिर के प्रांगण के चतुर्दिक स्तंभों पर आश्रित बरामदा है जो छत से ढका है और दोनों ओर से खुला है। इस प्रांगण में जगह–जगह परिशिष्ट कक्ष में एक प्रवेश द्वार है।

मंदिर के पीछे का भाग भी एक सेतु द्वारा मुख्य प्रवेश द्वार से जुड़ा है। इससे सम्बद्व एक विस्तृत दो मंजिला प्रवेश कक्ष है, जो संभवतया मूर्तियों के लिए बनाया गया था। मंदिर के समक्ष एक दीप स्तंभ है जो सौंदर्य के कारण दर्शनीय है।

इस मंदिर के उॅचे चबूतरे को देखकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इसके निर्माण में स्थापत्य नियम की उपेक्षा की गई है। फिर भी फर्गुसन महोदय ने इस निर्माण योजना की प्रशंसा की है। उनके अनुसार ऐसी संरचना में अर्थ एवं श्रम दोनों की बचत होती है। कलाकार ने अपनी कला का पूर्ण उपयोग कर इसे अतिसुंदर बनाया है। इस मंदिर के अंग–प्रत्यंग की बनावट अति सुन्दर है।

इस मंदिर की भित्तियों पर उत्कीर्ण मूर्तिया सजीव है। इस मोटे स्तंभ में विविध देवी देवताओं की मूर्तिया सुशोभित है। शिल्पियों ने इन मूर्तियों का अलंकरण इस निपुणता से किया है, मानों उन पर मोती माणिक उतार दिये गए हों। जगह–जगह रामायण, महाभारत और पुराणों के अनेक दृश्य अंकित हैं। पुराणों में रावण द्वारा कैलाश पर्वत उठाने तथा शिवजी द्वारा उसे अंगूठा से

दबाकर रावण को विवश करने की कथा का उल्लेख हुआ है जिसका यहॉ बड़ा ही सुन्दर चित्रण मिलता है।

कैलाशनाथ मंदिर की निर्माण योजना पत्तदकल के विरूपाक्ष मंदिर की भांति है। संभव है कि इस मंदिर के निर्माण की प्रेरणा चालुक्य मंदिर से ली हो, पर्सी ब्राउन इसे द्रविड़ स्थापत्य शैली का ही विकसित रूप मानते हैं। वे यह भी मानते हैं कि इसकी अलंकरण तथा मूर्तियॉ दक्षिण के सारे मंदिर की मूर्तियों से सुंदर है। एक ही चट्टान को काटकर बना संसार में कोई दूसरा भवन नहीं है। यह मंदिर वास्तव में वास्तु शिल्प का एक आश्चर्य है।